Dr• Manoj Kumar Singh
Assistant Professor
P.G.Deptt.of Psychology
Maharaja Bahadur Ram Ran Vijay Prasad Singh college Ara
Date; 12/02/2026
Class: U.G Semester - 4th
(MJC-5)
Abnormal Psychology,

Topic -

BIOLOGICAL MODELS

परिचय **(Introduction)**

असामान्यता का जैविक मॉडल, असामान्यता / असामान्य व्यवहार की व्याख्या करने के लिए जैविकीय एवं चिकित्सिकीय दृष्टिकोण को अपनाता है। ये मॉडल मानता है कि असामान्य व्यवहार विभिन्न जैविक कारकों, जैसे- मस्तिष्क के रसायन, आनुवंशिकी या तंत्रिका तंत्र के विकारों के कारण होता है। अर्थात् इस मॉडल में बताया गया है कि मानव का व्यवहार उसके मस्तिष्क तथा उसके रसायनों द्वारा नियंत्रित होते हैं। इस मॉडल की मुख्य धारणा यह है कि मानसिक बीमारी, शारीरिक बीमारी से मिलती-जुलती है और इसलिए इसका निदान तथा उपचार उसी तरह किया जा सकता है जिस तरह से शारीरिक बीमारी का निदान तथा उपचार किया जाता है।

उदाहरण के लिए अवसाद. द्वि-ध्रुवीय विकार या सिजोफ्रेनिया को मस्तिष्क में रासायनिक असंतुलन या संरचनात्मक असामान्यताओं के कारण माना जा सकता है। इस मॉडल को रोग मॉडल, चिकित्सकीय मॉडल, जननिक / उत्पत्तिमूलक मॉडल के नाम से भी जाना जाता है।

वास्तव में इस मॉडल में असामान्य व्यवहार की व्याख्या मुख्यतः दो स्तरों पर की जाती है-

(1) प्रथम स्तर-प्रथम स्तर पर असामान्य व्यवहार को केन्द्रीय तंत्रिका तत्र (Central Nervous System) का रोग माना जाता है। यह रोग या तो जन्मजात होता है या तो फिर किसी प्रकार के मानसिक / मस्तिष्कीय विकार के कारण उत्पन्न होता है। इस स्तर की मान्यतानुसार व्यक्ति के असामान्य व्यवहार में उसके मनोवैज्ञानिक या मनोसामाजिक कारकों की भूमिका को कोई महत्त्व नहीं दिया जाता है।

(2) द्वितीय स्तर-द्वितीय स्तर, जो तुलनात्मक रूप से अधिक नवीन है, पर व्यक्ति के आसामान्य व्यवहार का कारण जैव रसायनिक प्रक्रियाओं (Bio-chemical Processes) का असंतुलित होना बताया गया है। अतः जब व्यक्ति के शरीर के भीतर की ये प्रक्रियाएँ किसी कारणवश असंतुलित हो जाती हैं, तो व्यक्ति में मानसिक विकृति आ जाती है। इसके विपरीत जब जैव प्रक्रियाएँ सन्तुलित रहते हुए सामान्य रूप से चलती रहती है तो व्यक्ति का व्यवहार भी सामान्य बना रहता है।

उपर्युक्त स्तरों के आधार पर जैविक मॉडल की दो विचारधाराओं का जन्म हुआ। इन्हीं दोनों विचाराधाराओं के आधार पर निम्नलिखित दो प्रतिमानों का प्रतिपादन किया गया जिनका वर्णन आगे किया जा रहा है-

(1) आरंभिक / प्राचीन जैविक मॉडल (Early/Old Biological Model)

(2) आधुनिक जैविक मॉडल (Modern Biological Model)

आरंभिक / प्राचीन जैविक मॉडल ***(Early/Old BiologicalModel***)

कुछ आरभिक/प्राचीन वैज्ञानिकों का मानना था कि मानसिक विकृति या असामान्य व्यवहारका कारण शारीरिक रोग के समान ही दैहिक होता है। अर्थात असामान्य व्यवहार एक प्रकार का रोग है जिसकी उत्पत्ति का मुख्य कारण मस्तिष्क में विकृति (Brain Disorder) है। इस मॉडल के प्रारम्भिक समर्थकों में हाल्लर तथा घिसिंगर का नाम आता है। इन वैज्ञानिकों ने 1845 में इस बात का दावा किया था कि सभी प्रकार के मानसिक रोगों की व्याख्या मस्तिष्कीय विकृति के आधार पर की जा सकती है। चूंकि इसी समयावधि में वैज्ञानिकों द्वारा सामान्य पैरेसिस जैसे मानसिक रोग का प्रेक्षण भी किया गया था अतः इससे प्राप्त निष्कर्ष से उक्त विचारधारा की पुष्टि भी हो गयी। इस रोग की शुरुआत में रोगी व्यक्ति बाँह तथा पैर में कमजोरी का अनुभव करता है फिर उसमें व्यामोह विकसित होता है तथा व्यवहार में झक्कीपन आ जाता है तत्पश्चात् फिर धीरे-धीरे उसके पूरे शरीर में पक्षाघात होता है और वह मर जाता है।

इसके बाद जैविक मॉडल के विकास में जर्मन मनश्चिकित्सक क्रेपलिन ने भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। उन्होंने 1883 में 'कम्पैडियम डेर साइकियाट्री (Compendium der Psychiatrie) नामक एक प्रसिद्ध पाठ्य-पुस्तक लिखी, जिसमें उन्होंने पहली बार मनोविकारों का वर्गीकरण प्रस्तुत किया जो बाद में DSM-IV का आधार बना। उन्होंने न केवल मानसिक रोगों की उत्पत्ति में मस्तिष्कीय विकृति की ही भूमिका पर बल डाला अपितु कई ऐसे सम्बद्ध कार्य किये जिससे जैविक मॉडल को फलने-फूलने में सहायता भी मिली। उनका विचार था कि कुछ विशेष लक्षण पैटर्न व्यक्ति में इस तरह सतत होते है कि उन्हें मानसिक रोग का प्रकार कहा जा सकता है। उनके इस दृष्टिकोण से, मानसिक रोग का प्रत्येक प्रकार, उसके दूसरे प्रकार से अलग और भिन्न है, और प्रत्येक रोग काफी पूर्वनिर्धारित एवं पूर्वानुमेय होता है, जैविक मॉडल को काफी समर्थन मिला है।

आधुनिक जैविक मॉडल **(Modern Biological Model**)

आधुनिक शोधों से यह स्पष्ट हो गया है कि व्यक्ति असामान्य व्यवहार का कारण केवल उसकी मस्तिष्कीय विकृति ही नहीं होती है। बल्कि व्यक्ति के असामान्य व्यवहार के लिए अन्य कारक, जिनका आधार जैविक ही होता है, भी उत्तरदायी होते है। ऐसे कारकों को निम्नलिखित तीन श्रेणियों में बांटकर अध्ययन किया गया है-

(1) व्यवहार आनुवंशिकी (Behaviour Genetics)

(2) मस्तिष्क में जैवरसायनिक असंतुलन (Biochemical Imbalances in brain)

(3) जैवदैहिक चिकित्सा (Biophysical therapies)